

UGC Approved Jr. S.No. 48510

ISSN 0976-5085

MUMUKSHU

Journal of Humanities

A REGISTERED REVIEWED/REFERRED RESEARCH JOURNAL

Volume 9 No. 1

June 2017



Editor-in-Chief
Dr. A.K. Mishra

Editor
Dr. Anurag Agarwal



पर्यटन, व्यवसायवाद एवं मानव प्रसन्नता : चुनौतियां एवं अवसर

डॉ. नीतू सिंह तोमर*

सारांश विश्व के प्रायः सभी देशों में पर्यटन को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। अविकसित देशों सहित भारत के पिछड़े राज्यों में पर्यटन की स्थिति दयनीय है। भारत के राज्यों में पर्यटन हेतु नई पर्यटन नीति, अन्य भारतीय राज्यों एवं आसपास के विभिन्न देशों की उत्कृष्ट रीतियों के विस्तृत विश्लेषण के आधार पर विकसित की गई है। भारत के अनेक राज्य ऐतिहासिक, पुरातात्विक, पौराणिक, धार्मिक, प्राकृतिक, पारिस्थितिकी और सांस्कृतिक महत्त्व के बहुमूल्य पर्यटन स्थलों से सम्पन्न हैं। इस प्रकार पर्यटन के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर रोजगार सृजित कराया जाता है। पर्यटन हेतु अन्य विभागों का सहयोग अत्यन्त आवश्यक है। सभी देश-विदेश के सैलानी भारतीय राज्यों के प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों की ओर आकर्षित होते हैं।

एक समय ऐसा भी आया जबकि विद्वानों और विश्व नेताओं ने यह चरम प्रश्न उठाया— क्या आज हम अधिक खुशहाल हैं? और पूरी दुनिया में इसकी जाँच/परीक्षा के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र संकल्प 2011 आया जिसमें सदस्य देशों का आवाहन किया गया कि वे अपने लोगों को खुशहाली के स्तर को मापें और इसी आधार पर जन-नीतियों का निर्धारण करें। डब्लू.एच.आर. 2011 के ही एक रोचक और आँख खोलने वाली विज्ञान सभा का है कि दुनिया में मानव-कुशलता अथवा खुशहाली की स्थिति क्या है? आने वाले समय में नीति-निर्माताओं के बीच जो बदलाव अपेक्षित है, उसे समझने के लिए प्रथम कदम के रूप में कुछ विचारों को उठा लेना श्रेयस्कर होगा।

वास्तव में एक ऐसे मानववादी आन्दोलन की आवश्यकता है जो समाज में विद्यमान पुराने मूल्यों की पुनः स्थापना करे, कम से कम उन मूल्यों की जो ईमानदारी, सम्मान और मानव प्रेम से सम्बन्धित हैं। व्यवसायों के लिए यह विचारा मूलमन्त्र की नीति इस बात पर कि विशेषज्ञ की निपुणता जनता के लिए है।

मुख्य शब्द: Turism—पर्यटन, Marketinism—पर्यटनवाद, Human—मानव, Happiness—प्रसन्नता, Chellanges—चुनौतियां, Oportunities—अवसर

विश्व के प्रायः सभी देशों में पर्यटन को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। अविकसित देशों सहित भारत के पिछड़े राज्यों में पर्यटन की स्थिति दयनीय है। भारत के राज्यों में पर्यटन हेतु नई पर्यटन नीति, अन्य भारतीय राज्यों एवं आसपास के विभिन्न देशों

की उत्कृष्ट रीतियों के विस्तृत विश्लेषण के आधार पर विकसित की गई है। भारत के अनेक राज्य ऐतिहासिक, पुरातात्विक, पौराणिक, धार्मिक, प्राकृतिक, पारिस्थितिकी और सांस्कृतिक महत्त्व के बहुमूल्य पर्यटन स्थलों से सम्पन्न हैं। इस प्रकार पर्यटन के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर रोजगार सृजित कराया जाता है। पर्यटन हेतु अन्य विभागों का सहयोग अत्यन्त आवश्यक है। सभी देश-विदेश के सैलानी भारतीय राज्यों के प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों की ओर आकर्षित होते हैं।

*एम.ए.पी.—एच.डी. समाजशास्त्र, पोस्ट डॉक्टोरल फेलो, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली-110002

में बड़े पैमाने पर रोजगार उपलब्ध कराया जाता है। पर्यटन हेतु अन्य विभागों का सहयोग अत्यन्त आवश्यक है। तभी देश-विदेश के सैलानी भारतीय राज्यों के प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों की ओर आकर्षित होंगे।

भारत के राज्यों में पर्यटन की इन परिस्थितियों की उपलब्धता है। यदि केंद्र स्तरीय राज्यों के पर्यटन को बुनियादी ढांचे में सुधार कर लिया जाए तो राज्यों की क्षेत्रीय संस्कृति, रीति-रिवाज, मेले, त्यौहार, लोक-नृचाएँ, भाषा, नदियाँ, धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थल, औद्योगिक केंद्र एवं विभिन्न प्रजाति के वन्य जन्तु पर्यटकों को आकर्षित कर सकते हैं।

पर्यटन की दृष्टि से भारत के अनेक राज्यों में विकास की अपार संभावनाएँ हैं जिसे यदि असली जान पहनाया जाए तो यह सभी राज्य सहित भारत विश्व पर्यटन के नक्शे पर अपनी अलग और विशिष्ट पहचान बना सकते हैं।

भारत के अधिकांश राज्यों में अनेक स्थल नैसर्गिक सौंदर्य का अथाह सागर हैं। किसी मुगल सम्राट ने बल्लू को स्वर्ग कहा, तो कुछ ने पंचमढी को 'महादेवी' की रानी की संज्ञा से नवाजा। कल्लू-मनाली, जम्मू, मंसूरी, नैनीताल, आगरा और न जाने कितने पर्यटनीय स्थल हैं। भारत में जहाँ प्राकृतिक सौंदर्य विकसित है, तब निकल पड़ता है, किसी ऐसे मनोरम स्थल की ओर पर्यटन के लिए, ताकि मिल सके—मन की शांति और उत्तर सके—नयन से अन्तर्मन तक की खोज, खो जाए—कहीं सौंदर्य के अंतरिक्ष में, लेकिन जब सुविधा, साधन और समय सीमित हो तब पर्यटन का भरपूर आनंद लेना हो, तो भारत के लखनऊ, आगरा, बस्तर, नैनीताल, दिल्ली आदि के मनोहारी दृश्यों में वह सब मिलेगा जो विश्व के किसी भी स्तरीय पर्यटन स्थल में मिलता है। ठंड में आया हुआ घना कोहरा, अंतर्मन को ठंडक दे जाता है और हिमालय क्षेत्र में होने वाले हिमपात की कमी को पूरा कर देता है।

अनेक राज्यों के नव निर्माण की बेला में राज्यों के गौरवशाली ऐतिहासिक स्थल, प्राकृतिक सुषमा, पर्यावरणीय क्षेत्रों को पर्यटन की दृष्टि से विकसित

किया जा सकता है। विश्व की शान हिन्दुस्तान विकास पर्व पर निरंतर अग्रसर होगा। इसकी व्यापक संभावनाएँ हैं।

वर्तमान समाजों में व्यवसायों की बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। समाज की विशिष्ट आवश्यकताओं जैसे स्वास्थ्य, अधिकारों की रक्षा, शिक्षा आदि की पूर्ति ये व्यवसाय ही करते हैं। अपने विशिष्ट ज्ञान एवं प्रशिक्षण के आधार पर ऐसे व्यवसाय में लगे विशेषज्ञ समाज के सदस्यों के लिए अपनी विशिष्ट सेवाएं आदान प्रदान करते हैं। वैज्ञानिक, शिक्षक, वकील, न्यायाधीश, डाक्टर, इंजीनियर, लेखक, पत्रकार, एवं एकाउण्टेण्ट्स तथा आडीटर्स, नर्स, कम्पाउण्डर ऐसी ही व्यवसायिक समूह है।

जनसाधारण की प्रचलित भाषा में 'व्यवसाय', 'धन्धा' तथा 'आजीविका' में कोई अन्तर नहीं किया जाता तथा ये पर्यायवाची ही समझे जाते हैं। समाजशास्त्र में इन शब्दों का प्रयोग विशिष्ट अर्थों में किया जाता है। व्यवसाय शब्द का प्रयोग उस व्यक्ति के लिए होता है जिसे अपनाने के लिए व्यक्ति की शिक्षा और प्रशिक्षण एक विशेष स्तर पर लेनी पड़ती है। इस अर्जित कुशलता का प्रयोग वह जनता की विशिष्ट सेवा प्रदान करने के लिए करता है। उसकी कुशलता उसका निजी गुण है। 'धन्धा' जीवन यापन करने के लिए कृषि, उद्योग, वाणिज्य, व्यापार एवं नौकरी कोई भी हो सकता है। 'आजीविका' वह कार्य है जो व्यक्ति अपने अन्दर की आवाज से प्रेरित होकर करता है और उससे जो भी मिल जाता है उसी से अपना जीवन यापन करता है। इससे कुछ अंश तक मिशनरी भावना पाई जाती है। परन्तु हमारे विवेचन का प्रमुख विषय व्यवसाय है। इसलिए थोड़ा विस्तार इसके अर्थ को समझना है।

शब्दोत्पत्ति की दृष्टि से, अंग्रेजी भाषा का Profession लैटिन भाषा के Profiteri शब्द से बना है जिसका आशय है 'सार्वजनिक रूप से घोषणा करना', 'वादा करना', अथवा 'शपथ लेना'। तेहरवीं शताब्दी में सबसे पहले इस शब्द का प्रयोग किया गया तब इसका प्रयोग जनसेवा में धार्मिक समर्पण के लिए किया जाता था। चौदहवीं शताब्दी में मध्य युग

के वीरों के वीरतापूर्ण कार्यों के लिए यह शब्द प्रयुक्त होता था। महारानी एलिजेबथ प्रथम के शासन काल के दौरान इसके अर्थ को व्यापकता मिली और यह आह्वान पर अपनाई गई किसी आजीविका के लिए प्रयोग किया जाने लगा। सत्रहवीं शताब्दी में यह शब्द कानून, चिकित्सा और धर्म विज्ञान के लिए प्रयोग होने लगा। सन् 1939 में फ्रैंडरिक डेनीसन मेरिस ने व्यवसाय की परिभाषा करते हुए लिखा है कि, "यह विशेष रूप से पेशा है जो मनुष्यों को मनुष्य के रूप में सेवा देता है, इसीलिए यह उस व्यापार से अलग है जो मनुष्य की बाह्य आवश्यकताओं या अवसरो के लिए साधनों की व्यवस्था करता है।"²

व्यापार को अनेक बाधाओं के साथ जूझना पड़ रहा है व्यापारिक माहौल लगातार चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है क्योंकि वैश्विक प्रगति के सम्बन्ध में भारत के निर्यात में गिरावट आई है तथा मेगा रीजनल ट्रेडिंग व्यवस्था संबंधी समझौते से भारत को बाहर कर दिए जाने का खतरा है।

विकास की त्वरित और स्थायी दरें निर्यात विकास की त्वरित दरों से संबंधित हैं। कुछ देशों, यदि कोई है ने अकेले अपने घरेलू बाजार की दर 7+ की विकास दर तक प्रगति की है वास्तव में ओस्ट्री (2006) के अनुसार स्थाई विकास मुख्यतः मैन्यूफैक्चरिंग निर्यातकों की अपनी विकास दर से लगभग 36 प्रतिशत तक होती है पर जी.डी.पी. अनुपात की तुलना में औसत विकास से संबंधित होने के कारण ही स्फुरित होती है। भारत को भी इससे अलग स्थिति से अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।³

यदि ऐसा है तो भारत क्या पूर्वानुमान करे? वर्ष 2002-03 और 2008-09 के बीच भारत के त्वरित विकास चरण के दौरान जी.डी.पी. से संबंधित सेवाओं के निर्यात के अनुपात में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई जो पहले लगभग 4.0 प्रतिशत प्रति थी, वह बढ़कर लगभग 9.0 प्रतिशत हो गई। इसके विपरीत मैन्यूफैक्चरिंग एक्सपोर्ट कम था। तथापि, वैश्विक आर्थिक संकट के पश्चात् लगता है कि भूमिकाएं परिवर्तित हो गयीं। मैन्यूफैक्चरिंग निर्यातकर्ता को यह लगता है कि वे सेवा निर्यातकों की तुलना में बेहतर

कर रहे हैं। इससे भी अधिक दुखदायी बात यह है कि गत पांच वर्षों के दौरान दोनों ने ही निर्यात का सामना किया है जो एक अच्छा संकेत नहीं है। मानवता के लिए सुखमय जीवन न केवल सार्वजनिक फकीरों और दाशनिक बल्कि अर्थशास्त्रियों का भी लक्ष्य रहा है। अर्थशास्त्र सम्बन्धी जितना भी सच है उन्नति, वृद्धि तथा विकास पर, वह अंततः मानव जीवन में अधिक सुख और आनंद लाने के लिए लक्षित रहा है। समय के साथ-साथ अलग-अलग विचार सामने आते रहे हैं। इस अत्यंत जटिल शब्दावली 'खुशहाली' अथवा 'प्रसन्नता' अथवा 'आनंद' की व्याख्या करने के लिए और अंततः मानवता को यहाँ तक पहुँची है।⁴

एक समय ऐसा भी आया जबकि विद्वानों की विश्व नेताओं ने यह चरम प्रश्न उठाया— क्या हम अधिक खुशहाल हैं? और पूरी दुनिया ने इसकी जाँच/परीक्षा के पश्चात् संयुक्त राष्ट्र संकल्प बनाया जिसमें सदस्य देशों का आवाहन किया गया कि वे अपने लोगों को खुशहाली के स्तर को बढ़ाएं और इसी आधार पर जन-नीतियों का निर्माण करें। डब्लू.एच.आर. 2011 के ही एक रोचक और जीवंत खोलने वाली जिज्ञासा रखी गई है कि दुनिया में मानव-कुशलता अथवा खुशहाली की स्थिति क्या है? आने वाले समय में नीति-निर्माताओं के बीच जो बदलाव अपेक्षित है, उसे समझने के लिए डब्लू.एच.आर.से कुछ विचारों को उठा लेना आवश्यक होगा।⁵

यह चरम विरोधाभासों का युग है। एक ओर जहाँ दुनिया में अकल्पनीय परिष्कार वाली तकनीक का लोग आनंद उठा रहे हैं, वहीं एक बिलियन लोगों के पास पर्याप्त भोजन भी नहीं है। विश्व अर्थव्यवस्था या आधुनिक तकनीक और सांख्यिक प्रगति के बूते पर उत्पादकता के नए शिखर छू रही है, लेकिन साथ ही उसी अनुपात में इससे प्राकृतिक पर्यावरण का क्षय हो रहा है। पारम्परिक पैमाने पर देखें तो अनेक देशों में भारी आर्थिक प्रगति हुई है लेकिन, इस के साथ आधुनिक जीवन में मोटार धूम्रपान, मधुमेह, अवसाद आदि व्याधियाँ बढ़ रही हैं। बुद्ध और सुकरात जैसे संतों-महात्माओं ने मानव

को बार-बार आगाह किया था कि केवल भौतिक शक्ति हमारी आंतरिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकती। मानवीय आवश्यकताओं विशेषकर शक्तों को दूर करने, सामाजिक न्याय तथा प्रसन्नता की प्राप्ति करने के लिए भौतिक जीवन का उपयोग होना चाहिए।

डब्ल्यू.एच.आर. 2012 अमेरिका-विश्व की आर्थिक शक्ति- के बारे में एक उदाहरण प्रमुखता से प्रस्तुत करता है, जिसने पिछली आधी सदी के दौरान नवान आर्थिक और तकनीकी प्रगति की है, लेकिन नागरिकों की आत्मप्रतिवेदित प्रसन्नता में बिना कोई इजाफा किए जो कि आज की गंभीर चिंताओं से प्रकट होता है। यथा अनिश्चितता एवं चिंता घरम पर सामाजिक और आर्थिक असमानता में भारी वृद्धि, सामाजिक विश्वास या भरोसे में कमी, सरकार में विश्वास सर्वकालिक न्यूनता आदि गंभीर चिंताएं हैं।⁶

व्यवसायी वर्ग भारतीय समाज की शक्ति सम्पन्न अमिजात वर्ग का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह नहीं वह आवश्यक सामाजिक सेवाओं से सम्बन्धित है। इसीलिए उसके द्वारा अपने सामाजिक दायित्व की उपेक्षा प्रत्येक जागरूक नागरिक के लिए चिन्ता का विषय है। यह सच है कि समूचा भारतीय समाज ही नैतिक संकट से गुजर रहा है परन्तु फिर भी वह वर्ग जिसके ऊपर उसके व्यवसाय के स्वभाव से ही जन-सेवा का भार है अपने व्यवसाय को शोषणकारी बनायेगा तो क्षम्य नहीं कहा जा सकता। सर्वोच्च न्यायालय के भूतपूर्व न्यायमूर्ति वी. आर. कृष्णा जय्यर ने भारतीय व्यवसायों के लिए लिखा है कि, "सभी व्यवसाय जन साधारण के विरुद्ध षड़यन्त्र हैं।" उन्होंने लिखा है कि व्यवसायियों का भारत की जनता के प्रति दायित्व है। उन्हें अपने दृष्टिकोण और विवेक को मानवीय बनाना ही होगा क्योंकि

वैधानिक और वैचारिक दोनों दृष्टियों से वे जनता के प्रति जबाबदेह है। यदि वे स्वयं अपनी कार्य-विधि और निपुणता का मानवीयकरण नहीं करते तो एक दिन जन आक्रोश उनके विरुद्ध जाग उठेगा। उन्हीं के शब्दों में, "यह छोटा आदमी शीघ्र ही अपनी कुण्डलनी शक्ति से जागजायेगा, फिर वह शासकों को शासित करेगा, जजों की जाँच करेगा, ऑडिटर्स का आडिट करेगा, पुलिस पर नियन्त्रण करेगा, डाक्टरों की चिकित्सा करेगा तथा वकीलों, डाक्टरों, आडिटर्स आदि की प्रक्रियाओं के विवेक और नैतिक आदर्शों का समाजीकरण करेगा।"

वास्तव में एक ऐसे मानववादी आन्दोलन की आवश्यकता है जो समाज में नैतिकता के पुराने मूल्यों की पुनः स्थापना करे, कम से कम उन मूल्यों की जो ईमानदारी, सच्चाई और मानव प्रेम से सम्बन्धित है। व्यवसायों के लिए यह विचारा मूलमन्त्र की भाँति होना चाहिए कि 'विशेषज्ञ की निपुणता जनता के लिए है।'

संदर्भ सूची

1. डॉ. देवाशी मुकर्जी, पर्यटन उद्योग के विकास की संभावनाएं, आईआरजेएमएसएच, दूसरा प्रकाशन, दिल्ली, 2015 पेज-118
2. डॉ. एम. के. मित्तल, साधना प्रकाशन, रस्तोगी स्ट्रीट, सुभाष बाजार, मेरठ-250002, पेज-183
3. आर्थिक समीक्षा 2014-15, यंग ग्लोबल पब्लिकेशन, टोलस्टोय मार्ग, नई-दिल्ली-110092, पेज-34,
4. वही, पेज-34
5. रमेश सिंह, भारतीय अर्थव्यवस्था, एमसी ग्रेहिल एजुकेशन पब्लिकेशन, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110016, पेज-18
6. वही, पेज-19